बिहार की चित्रकला

चित्रकला के इतिहास को बिहार का अनुपेक्षणीय योगदान रहा है। धार्मिक तथा सामाजिक पारिवारिक आचारों के प्रसंग में यहाँ विभिन्न तरह की चित्रकारियाँ होती रही हैं। मधुबनी की विश्वप्रसिद्ध चित्रकारी अपने मूल में एक लोकचित्रकारी ही है। भोजपुरी, मगही, अंगिका और बज्जिका क्षेत्रों में भी विभिन्न उत्सवों तथा पर्वों पर चित्रकारी तथा मूर्ति-निर्माण की परंपरा आज भी जीवित है। दीपावली के मौके पर घर की सफाई-लिपाई कर उसकी दीवारों पर नारियाँ गैरिक (गेरू) और चूने से वृक्ष, मनुष्य, पशु, पक्षी आदि के चित्र अंकित कर देती हैं। इन्हें भित्ति चित्र कहते हैं। कोहबर वाले कमरे में दीवार पर वर-कन्या के सम्मिलन के प्रतीक के रूप में चौरेठा

पटना कलम का एक चित्र (छायांकन : अभिषेक चौबे)

(चावल का आटा) और सिन्दूर के घोल से विभिन्न मंगल सूचक चित्र बनाये जाते हैं। लोक चित्रकारी में रंगों की गुणवत्ता और विविधता ने मिथिला चित्रकारी को अंतरराष्ट्रीय प्रसिद्धि दिलाई है। ये लोक चित्रकारियाँ प्रायः शतप्रतिशत नारी वर्ग का कार्य रही हैं। नारी समाज में कपड़े – रूमाल, बिछावन की चादर, तकिए का खोल, परदा आदि पर धागे से बेल-बूटे, पक्षी, पशु, देवता आदि के चित्र बनाने की भी परंपरा रही है। कपड़ों पर चित्रांकन की परंपरा में धागा और रंग दोनों के प्रयोग होते रहे हैं। रंग-चित्रों के लिए काठ से बने छापों के उपयोग की परंपरा भी रही है। बिहार की ग्रामीण महिलाएँ मूँज, कुश तथा गेहूँ के डंठलों से दौरी, दौरा, डाली, मउनी, मोढ़ा आदि बनाने के क्रम में अलग-अलग रंगों की आकृतियाँ बना लेती हैं। निश्चय ही इन कलाओं का अपेक्षित व्यावसायिक विकास नहीं हो पाने के कारण इन्हें शहरी संस्कृति निगलती जा रही है।

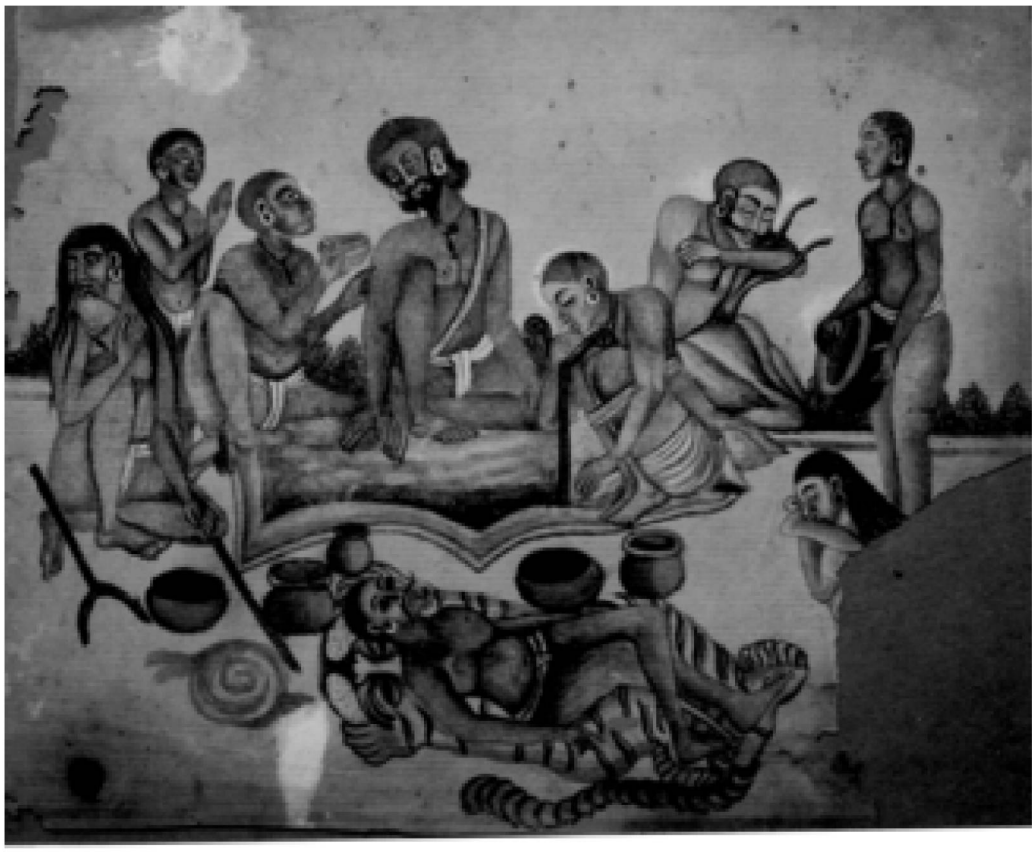

पटना कलम का एक अन्य चित्र (छायांकन : अभिषेक चौबे)

बिहार में चित्रकला का व्यापक विकास पटना कलम के रूप में हुआ। पटना कलम का तात्पर्य हुआ चित्रकारी की पटना शैली। इस पटना कलम के अंतिम महत्त्वपूर्ण चित्रकार राधामोहन प्रसाद का कथन है कि ''बौद्ध धर्म के विकास के साथ-साथ भारतीय चित्रकला के इतिहास में एक नवीन और विकसित अध्याय का आरंभ होता है। इस युग में बिहार और उसकी राजधानी पाटलिपुत्र का स्थान सबसे अग्रगण्य हो उठता है।'' बिहार में चित्र तथा मूर्तिकला के विकास का इतिहास मौर्यकाल तक पहुँचता है। पाटलिपुत्र से बौद्ध प्रचारकों के साथ-साथ चित्रकार तथा मूर्तिकार भी बाहर भेजे जाते थे। बुद्ध के उपदेश और उनकी जीवनी के विविध प्रसंग मंदिरों की भित्तियों तथा स्तूपों पर वे चित्र-मूर्ति के रूप में अंकित करते थे। बौद्ध धर्म के ह्रास के साथ-साथ चित्रकला की धारा भी कमजोर पड़ती गयी। उसके बाद सैकड़ों वर्षों तक बिहार का इतिहास चित्रों से खाली दिखाई पड़ता है। मुगल सम्राट औरंगजेब के काल में राजकीय संरक्षण से वंचित हो जाने के कारण चित्रकार-मूर्तिकार जीविकोपार्जन के लिए देश के अनेक प्रमुख नगरों में गये। उनमें कुछ पटना भी आये। स्थान परिवर्तन के बावजूद उन्होंने अपनी चित्रकारी नहीं छोड़ी। उनकी चित्रकारी में मूल

©BSTBPC
NOT TO BE PRINTED

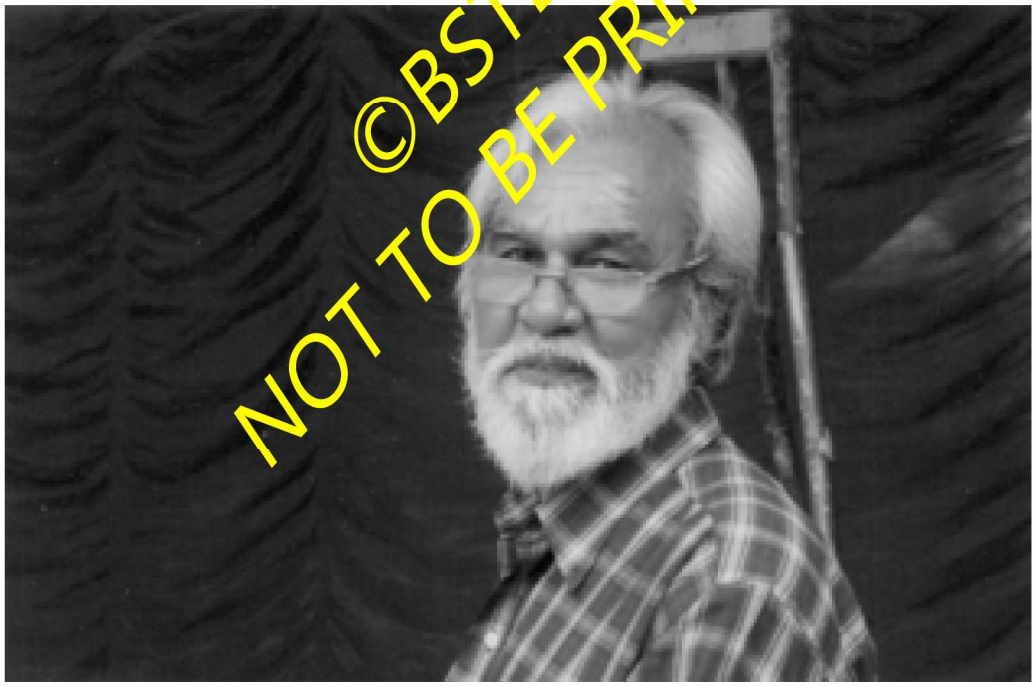

श्याम शर्मा
पटना कला एवं शिल्प महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य

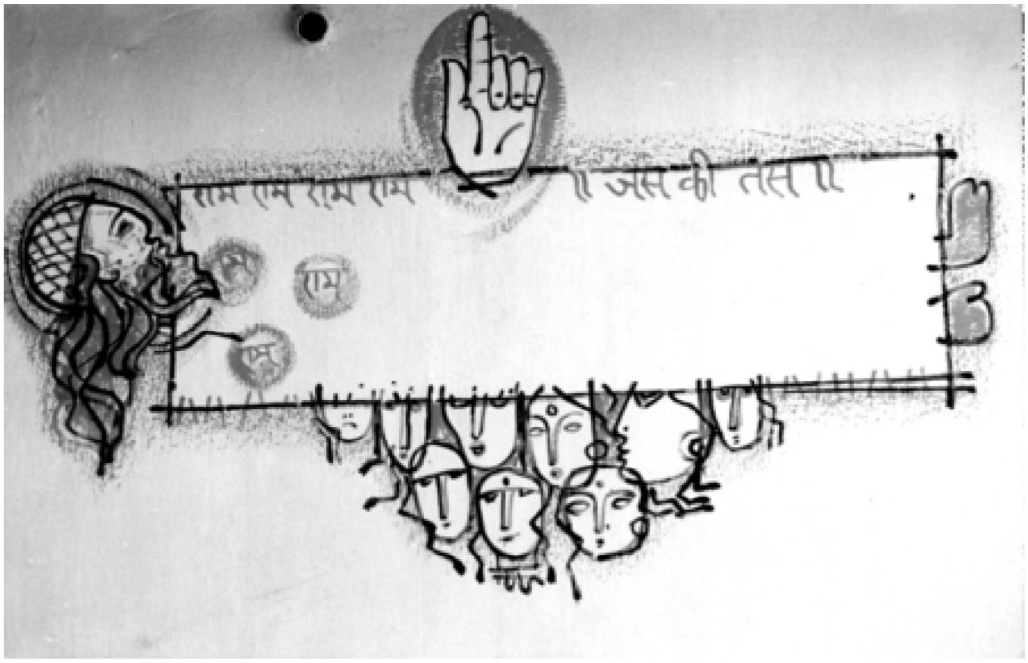

श्याम शर्मा का एक चित्रांकन

दिल्ली वाली चित्रकारी की विशेषताएँ तो निहित रहीं परंतु स्थानीय प्रभाव से कुछ नयी विशेषताएँ भी उभरीं। उस नयी शैली को पटना शैली या पटना कलम नाम मिला। इस चित्र शैली का काल सन् 1760 के आसपास से सन् 1947 के लगभग तक माना जाता है।

पटना चित्रशैली के प्रमुख चित्रकारों में जयराम दास, झुमक लाल, फकीरचंद लाल, शिवदयाल, भैरोजी, मिर्जा निसार मेंहदी, गोपाल लाल, गुरु सहाय, सेवक राम, कन्हैया लाल, जयगोविन्द लाल, सोना कुमारी, महादेव लाल, ईश्वरी प्रसाद वर्मा आदि प्रमुख थे। विद्वानों ने ईश्वरी प्रसाद वर्मा को पटना कलम का अंतिम चित्रकार माना है परंतु वास्तविकता यह है कि महादेव लाल जी के शिष्य बाबू राधामोहन प्रसाद और ईश्वरी प्रसाद वर्मा के शिष्य दामोदर प्रसाद अम्बष्ठ ने गुरु परंपरा की उस शैली का अपनी पीढ़ी तक बखूबी निर्वाह किया।

पटना कलम के चित्रों में विषय के रूप में पशु-पक्षी, प्राकृतिक दृश्य, किसान, लघु व्यवसाई, नाई, धोबी, बढ़ई, लोहार, मोची, तेली, मिस्त्री, गरीब ब्राह्मण, मुनीम, जमींदार आदि के जीवन तथा कार्य हुआ करते थे। चित्रकारों को स्थानीय जमींदारों-नवाबों के संरक्षण भी मिले थे परंतु उनके चित्रों के मुख्य ग्राहक अंग्रेज व्यापारी और अधिकारी उनसे प्रस्ताव कर के चित्र बनवाते भी

थे। तत्कालीन जिलाधिकारी डब्ल्यू० जी० आर्चर ने ईश्वरी प्रसाद वर्मा के बनाये 300 चित्र खरीदे थे। आर्चर ने ही सर्वप्रथम मधुबनी चित्रकला से अंतरराष्ट्रीय जगत को परिचित कराया था।

पटना कलम के चित्रों की प्रमुख विशेषता बिहार के वर्ग विभाजित लोक जीवन का यथार्थ अंकन हुआ करती थी। वे चित्रकार विभिन्न पौधों के रस, गोमूत्र, फूल के रस, नील, गेरू, कोयला, गोंद, बकरी का दूध, कौड़ी, मोती, ताँबा, तूतिया, लाजवर्त (एक रत्न) आदि से तैयार रंगों का प्रयोग करते थे। यानी वे अपनी चित्रकारी में प्राकृतिक तथा खनिज दोनों रंगों का प्रयोग करते थे। वे चित्रकार पीले हाथ पेपर, जापानी कैंट पेपर या स्वयं बनाये पेपर पर चित्र बनाने के साथ ही काँच, अभ्रक और हाथी दाँत पर भी चित्रकारी करते थे।

श्याम शर्मा का एक चित्र (छापा कला)

बिहार परिवर्तनों का प्रदेश रहा है। प्रवृत्ति को नया उन्मेष और धारा को नया मोड़ देने वाली विभूतियों का यहाँ अधिक समय तक अकाल नहीं रहता। ऐसी ही एक विभूति के रूप में चित्रकार राधामोहन बाबू का जन्म पटना में हुआ। वे पटना चित्र शैली की ऐसी अंतिम कड़ी थे जिसने भविष्य के कलात्मक विकास के लिए एक पुख्ता, स्थायी और उर्वर भूमि तैयार कर दी।

राधामोहन बाबू ने पटना में कला और शिल्प महाविद्यालय की स्थापना कर पूरे राज्य में कलात्मक पुनर्जागरण की चेतना को व्यापक उभार प्रदान किया था। उस दौर में ही बिहार में उपेन्द्र महारथी जैसे बड़े कलाकार का पदार्पण हुआ। ये इस प्रदेश में ऐसी अंतरंगता के साथ रमे कि आजन्म अपनी कला-यात्रा का पल-पल बिहार की मिट्टी को समर्पित करते रहे। इस कला साधक ने अंतरराष्ट्रीय क्षितिज पर बिहार का नाम चर्चित किया है।

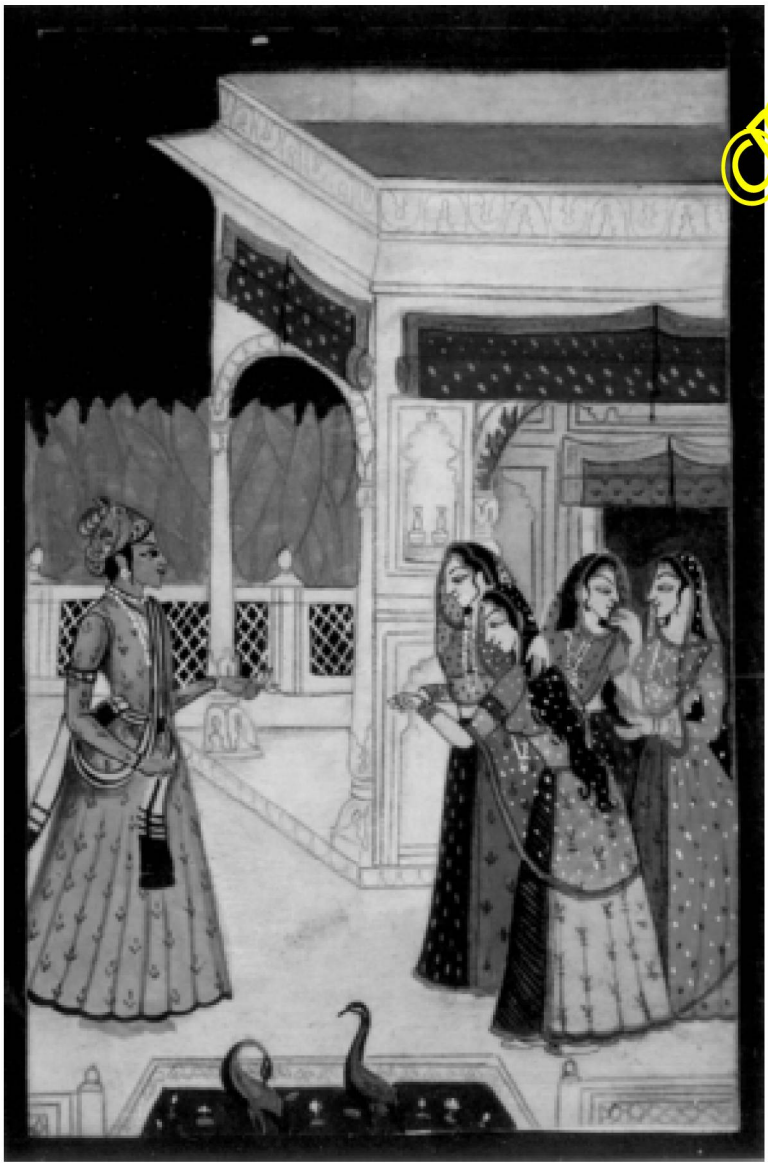

प्रारंभिक पटना कलम का एक नमूना

उपेन्द्र महारथी ने कलकत्ते में चित्रकला की शिक्षा पायी थी और उस दौरान उन्होंने महसूस कर लिया था कि कला को विदेशी प्रभावों से मुक्त कर राष्ट्रीय चेतना से जोड़ना अत्यावश्यक है। उनकी चित्रकारी पर भारतीय धर्म, दर्शन तथा राष्ट्रीयता का गहरा प्रभाव दिखाई पड़ता है। उन्होंने अपने दरभंगा-निवास के दौरान ही मिथिला की चित्र-मूर्ति आदि लोक कलाओं का गहरा अध्ययन किया और उनके महत्त्व से लोगों को परिचित कराया। लोक कलाओं पर उन्होंने लंबे काल तक शोधपरक कार्य करते हुए बिहार तथा बंगाल के सुदूर देहाती क्षेत्रों की यात्राएँ की थीं और प्राप्त

© CBSE NOT TO BE PRINTED

कलाकृतियों तथा शिल्पों की विशेषताओं से विशेषज्ञों को परिचित कराया था।

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत बिहार सरकार ने उपेन्द्र महारथी को पुस्तक भंडार, लहेरिया सराय से आग्रह के साथ बुलाकर उद्योग विभाग में डिजाइनर के पद पर नियुक्त किया था। उस पद पर रहते हुए महारथी जी ने प्रमाणित किया कि चित्रकारी तथा शिल्प के अलावा वास्तुकला के भी वे महारथी हैं। उनका डिजाइन किया हुआ राजगीर का शांति स्तूप उनकी राष्ट्रीयता मूलक कला-चेतना तथा कल्पनाशीलता का एक कालजयी प्रमाण है। प्राकृत और जैनॉलॉजी संस्थान, नालंदा और धौली (भुवनेश्वर) के शांति स्तूप की डिजाइनिंग भी महारथी जी ने ही की थी।

उपेन्द्र महारथी की कला-यात्रा में जापान की उस यात्रा का उल्लेखनीय महत्त्व माना जाता है जो उन्होंने वेणु शिल्प (बाँस कला) में विशेषज्ञता पाने के लिए की थी। वहाँ से लौटने के बाद उन्हें राष्ट्रपति भवन के एक कक्ष को वेणु शिल्प से अलंकृत करने के लिए विशेष रूप से दिल्ली बुलाया गया था। चित्रकारी, शिल्पकर्म, अध्ययन और शोध – उपेन्द्र महारथी के व्यक्तित्व की ये चार विशेषताएँ थीं। महारथी जी चित्रकार श्याम शर्मा की भाँति कविता तो नहीं लिखते थे परंतु कला से संबंधित लेखन और कथा-साहित्य की रचना करते रहते थे। 'वैशाली की लिच्छिवी', 'बौद्ध धर्म का अध्यात्म' और 'इन्द्रगुप्त' जैसी पुस्तकों के अलावा **जापानी वेणु शिल्प** पर उन्होंने एक स्वतंत्र पुस्तक लिखी थी। चित्रकार श्याम शर्मा का कथन है कि बिहार में कलाकर्म और शिल्पधर्म का वास्तविक उन्नयन महारथी जी ने ही किया।

राधामोहन बाबू के साथ पटना कलम का अंत माना जा सकता है। उनके बाद जिन कलाकारों ने बिहार में कलाकर्म और शिल्प धर्म को बहुआयामी आधुनिकता तथा प्रयोगात्मक नवीनता से युक्त किया उनमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नाम श्याम शर्मा का माना जाता है। अत्यंत स्नेहिल तथा सरल-सहज व्यक्तित्व वाले शर्माजी का जन्म मथुरा (1941 ई०) में हुआ था। कला तथा शिल्प महाविद्यालय, लखनऊ में वहाँ के प्राध्यापक जयकृष्ण अग्रवाल की देख-रेख में छापाकला में विशेषज्ञता प्राप्त करने के उपरांत शर्मा जी पटना आये और यहाँ के कला और शिल्प महाविद्यालय में छापाकला के विशेषज्ञ शिक्षक के रूप में अध्यापन करने लगे। नियुक्ति के लिए श्याम शर्मा का साक्षात्कार स्वयं उपेन्द्र महारथी ने लिया था।

राधामोहन बाबू और उपेन्द्र महारथी दृश्यक्षेत्र तथा आकृति के चित्रकार थे जबकि श्याम शर्मा ने अपनी छापा कला से विचारों तथा अनुभूतियों का प्रभावकारी अंकन किया है। उनके चित्रों में अपने समृद्ध अतीत के प्रति गहरा लगाव दिखाई पड़ता है। एकबार कैलिफोर्निया में वहाँ के कला विभाग के प्रोफेसर कोनार्ड हटिंग्सन ने श्याम शर्मा के चित्रों में प्राचीनता के प्रति विशेष लगाव को देखकर उनसे पूछा था कि "क्या आप पुरानी आकृतियों का प्रयोग करके अपने अतीत की संस्कृति को पुनर्स्थापित करना चाहते हैं?" तो श्याम शर्मा का उत्तर था कि "मेरी ये परंपरागत आकृतियाँ चासनी में पकी हुई गोली के समान हैं जो दर्शकों को अपने अतीत के बारे में सोचने को बाध्य

© BSTBPC NOT TO BE PRINTED

करती हैं, पुनर्स्थापित करने के लिए नहीं।'' निश्चय ही श्याम शर्मा के चित्रों में विचारों-भावों की प्रधानता का ही परिणाम है कि उनकी मानवीय तस्वीरें भी वैचारिकता के चलते शृंखला के रूप में व्यक्त हुई हैं। उन्होंने 'आपातकाल और जयप्रकाश नारायण' शीर्षक से एक चित्र शृंखला बनाई थी जिसकी प्रदर्शनी पटना में लगी थी।

अभ्यास

1. पटना कलम क्या है? संक्षिप्त परिचय दीजिए।
2. राधामोहन बाबू के महत्त्व पर एक टिप्पणी लिखें।
3. चित्रकला के क्षेत्र में उपेन्द्र महारथी के महत्त्वपूर्ण योगदानों का परिचय दीजिए।
4. छापा चित्रकारी क्या है? इसके विशेषज्ञ चित्रकार कौन हैं?
5. पटना कला और शिल्प महाविद्यालय का परिचय दीजिए।
6. वेणु शिल्प क्या है? वेणु शिल्प में उपेन्द्र महारथी के योगदान का परिचय दीजिए।
7. बिहार की चित्रकारी में डब्ल्यू० जी० आर्चर का क्या महत्त्व रहा है?
8. 'पटना कलम' चित्रशैली का काल कब से कब तक माना जाता है?
9. सामाजिक जीवन में चित्रकला के महत्त्व पर एक निबंध लिखें।
10. अपने गाँव-नगर या आस-पास के चित्रकारों के परिचय लिखें।

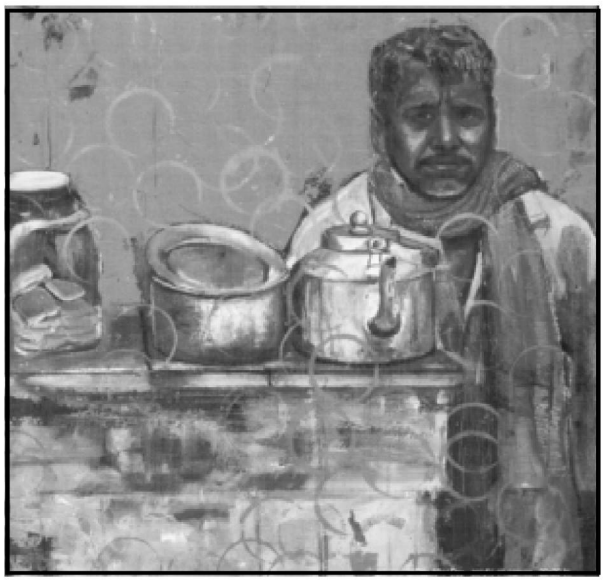

अनुनय चौबे की एक अन्य पेंटिंग